रिकॉर्डः—चलो चले माँ.... ॐ पिताश्री 30/8/62

ओऽम् शान्ति। सभी सेन्टर्स के ब्राह्मणकुल भूषण नूरे रत्नों ने यह गीत सुना। बच्चों को क्या करना चाहिए, जिनका भाषण नहीं चलता है तो ऐसे गीत सुन फिर इनका अर्थ करना चाहिए। मेहनत बिगर कब ऊँच पद मिल न सके। स्वर्ग, जिसको हेविन कहते हैं, उसको सभी याद करते हैं। तो यह गीत किस तरफ का इशारा कर रहा है। इस समय वो माँ जगदम्बा यहाँ चेतन में है और वहाँ उनके जड़ चित्र हैं। यह तो सब मानते हैं कि पुनर्जन्म सभी लेते हैं। जो ऊँच ते ऊँच हो गए हैं वे पुनर्जन्म लेते2 इस समय तमोप्रधान मे हैं। यह काँटों की दुनिया है तब तो कहते हैं कि माँ, अभी चलो, जहाँ कोई गम नहीं, दुःख नहीं। वो जगदम्बा अब सुन रही है। वो जगदम्बा भी पुनर्जन्म लेते2 अब अन्त में है। मनुष्य 84 जन्म लेते हैं तो ज़रूर पुनर्जन्म भी सिद्ध होता है। कर्म भी सिद्ध करते हैं। ऐसे कब कोई कह न सके कि पुनर्जन्म होता नहीं है। लिखा हुआ है 84 जन्म। वो लोग 84 लाख कह देते हैं, हम 84 कहते हैं। तो बच्चे चाहते हैं, अब माँ चलो; क्योंकि यह है जगदम्बा। सारे जगत के मनुष्य इनको माँ कहते हैं। प्रैक्टिकल में अब वो जगदम्बा है, जिनके लिए ही गीत है। कल्प पहले भी ऐसे ही गीत होंगे। जगतअम्बा भी हाज़िर होगी और गीत गाए होंगे। बुद्धि भी कहती है बरोबर मम्मा है तो बाबा भी है— जगदम्बा जगतपिता। कभी भी तुम ब्रह्मा और सरस्वती का इकट्ठा चित्र नहीं देखेंगे। दिलवाला मंदिर में भी जगत अम्बा अन्दर अलग कोठरी में पर्दे नशीन है। आदिदेव बाहर है। ब्रह्मा—सरस्वती की जोड़ी कब नहीं दिखाते हैं। ल॰ना॰ को जोड़ी में बिठा सकते हैं, ब्रह्मा—सरस्वती को नहीं; क्योंकि यह है मुखवंशावली, बेटी है। तो उनको बाजू में कैसे बिठावेंगे! फिर तो सबको बिठाना पड़े। अब वो बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं। माता है तो पिता भी है। यह माता—पिता वंडरफुल है। बेटी को ही माता कहा जाता है। शास्त्रों में भी है, ब्रह्मा के(की) बेटी सरस्वती। तो बच्चे कहते हैं फूलों के गाँव में ले चलो। गाँव तो ज़रूर मनुष्यों के लिए ही होगा ना। मुख्य हैं ही मनुष्य। तो तुम जानते हो बरोबर प्रैक्टिकल में जगदम्बा है। बच्चे कहते हैं— माँ, चलो। तुम सब वहाँ चलने के लिए ही पुरुषार्थ कर रहे हो जहाँ कोई गम न हो। जगदम्बा सरस्वती और ब्राह्मण बैठे प॰पि॰प॰ से ज्ञान सुनते हैं। शूद्र तो नहीं सुनते। बाबा कहते हैं— मैं अपने बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। यह वो ही बच्चे हैं जो कल्प पहले मेरे साथ मिले थे। मैं सन्मुख होकर ज्ञान सुनाता था तुम ही गोप—गोपियों के आगे। गोपीवल्लभ तो हूँ ना। फिर इनसे गोप—गोपियों के आगे प्रत्यक्ष हुआ हूँ। बच्चे ही पहचान लेते हैं। मैं हूँ निराकार; इसलिए मुझे पहचानना भी ज़रा कठिन है। वैसे तो शरीर के नाम—रूप की पहचान दी जाती है। यहाँ तो बाप खुद आकर समझाते हैं; क्योंकि मनुष्य बहुत मूँझे हुए हैं। कब कहते भागीरथ में आए, कब कहते नन्दीगण में आए। कब फिर कह देते कि वो सबमें हैं। भागीरथ नाम भी मशहूर है। इनके रथ में आते हैं तो ज़रूर रथ अलग चाहिए। इसको ही अश्व कहते हैं। मुसलमानों ने अश्व नाम सुना है तो घोड़ा दिखलाया है। हुसैन है हमारा बाबा। वो हुसैन हसीन दुनिया स्थापन करते हैं, इस अश्व में आते हैं। मुसलमान लोग घोड़े निकालते हैं। समझते हैं, हुसैन ने सवारी की थी। अब लड़ाई आदि की तो कोई बात ही नहीं है। धर्म स्थापक कब लड़ाई आदि नहीं करते हैं। हम धर्म स्थापन करते हैं ना। बहुत मीठी2 बातें बच्चों को समझाई जाती हैं। हर बात में सिद्ध होता है कि प॰ एक है। कोई दान—पुण्य करते हैं तो भी कहा जाता है— कृष्ण अर्पणम्। श्री कृष्ण शर्णनम। ऐसे कहते हैं। अब बाप समझाते हैं दो का मिलन कैसे होता है। एक तो है भी कृष्ण

प्रिंस और दूसर फिर है निराकार प०। दो इकट्ठे हो गए हैं। बरोबर ज्ञान लेते2 रात पूरी हो और दिन में जाकर श्री कृष्ण बना। कुछ घंटों की देरी लगती है। तो इसलिए मनुष्य मूँझे हैं। ईश्वर अर्पणाय या कृष्ण अर्पणाय कह देते हैं। वो निराकार और वो कृष्ण हो गया साकार। अब भगवान किसको कहें? दोनों को तो कह न सकें। वो निराकार तो जन्म–मरण में आता नहीं, कृष्ण आता है। 84 जन्म तो कहते हैं ना! सब पुनर्जन्म ज़रूर लेंगे। पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बुद्धि तक अवश्य आना है। कलाएँ उतरती जाती हैं। पुनर्जन्म लेते नीचे आते जाते हैं। सतयुग के बाद चक्कर फिरकर अन्त में कलियुग आना ही है। इस समय सब तमोप्रधान है। जो सतोप्रधान थे, उन्हों के ही मुख्य मंदिर, तीर्थ आदि बने हुए हैं। अवश्य उन्होंने इतनी रूहानी सर्विस की होगी। मंदिर में उन्हों को बहुत मानते–बिठाते हैं। अब शिवाजी ने तो तलवार से काम लिया, वो ... हिंसक हो गया। हिंसा करने वाले के फिर चित्र आदि क्यों बनाते हैं? वे कोई रूहानी सर्विस करने वाले तो हैं नहीं। देखो, कोई की भी बुद्धि काम नहीं करती है। कहते भी हैं, अहिंसा सबसे अच्छी है; परन्तु यह किसको पता नहीं कि अहिंसा परमोधर्म कहते किसको हैं। कोई अहिंसा वाला परे ते परे प्राचीन धर्म था, उनको अहिंसा परमोधर्म कहा जाता था। अब धर्म को तो गवर्मेन्ट मानती नहीं। अहिंसा परमोधर्म और कोई का नहीं निकला है। देवताओं का ही अहिंसा परमोधर्म था। काम–कटारी न चलाना, ऐसा कोई शास्त्र भी नहीं है। ऐसे कोई नहीं कहते कि हम नगन होने से बचाते हैं। द्रौपदी एक तो नहीं थी। सारी राजधानी स्थापन हुई है ना। राजयोग सिखलाने वाला बहुतों को पढ़ाते होंगे। मम्मा है ज्ञान–ज्ञानेश्वरी। ज्ञान बिगर कोई फूलों के गाँव जा न सके। काँटे जब तक ज्ञानामृत न पीवे, फूल बन न सके। अब यह गीत तो रेडिओ में आता है, इसका अर्थ तुम जानते हो। जगदम्बा की जीवन कहानी कितनी वण्डरफुल है। जगदम्बा संगम की ठहरी। उनकी इतनी महिमा है और सतयुग आदि में हैं ल०ना०। वहाँ तो जगदम्बा हो न सके। लक्ष्मी को जगदम्बा नहीं कहा जाता। वो ल०ना० तो राजा–रानी हैं। उन्हों को अपना प्रिंस होगा। तो सिद्ध होता है जगदम्बा–जगतपिता रचने वाले हैं और वो ल०ना० हैं पालना करने वाले। ऐसी2 बातें बड़ी युक्ति से क्लीयर कर समझानी है। दुनिया को पता नहीं है कि जगदम्बा कब आई। बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में अब जगदम्बा है। ब्रह्मा के लिए भी गाया जाता है। हम जानते हैं, बरोबर यह जगदम्बा अपने 84 जन्म भोग इस अन्तिम जन्म में फिर से आ, ब्रह्मा की मुखवंशावली बनी है। इनका नाम रखा है जगदम्बा। सन्यासियों को जगत पिता व जगत टीचर नहीं कहेंगे। उनको तो शास्त्र सुनाने वाले टीचर कह सकते हैं। गुरु तो है सदगति दाता। समझाया जाता है, सत् का संग तारे, कुसंग बोरे। सत् का संग बिल्कुल क्लीयर है। बाक़ी सब हैं कुसंग। बाप के पास रहते हैं, टीचर के पास भी जाते हैं। बाक़ी तारने–बोरने की बात गुरुओं पर हो जाती है। गुरु सदगति दे न(या) दुर्गति दे? जो भी कुसंग वाले हैं, वे सब दुर्गति देते हैं। सदगति को वे जानते ही नहीं। स्वर्ग–नरक को जानते ही नहीं। अपन जानते हैं, जगतपिता से लेकर सभी 84 जन्म लेते हैं। सबको तमोप्रधान में आना ही है। दुनिया थोड़े ही इन बातों को जानती है। तुमको यह ज्ञान अभी मिलता है। पहले तो अंधे थे। बाबा ने अभी सज्जा बनाया है। अभी जानते हैं, श्री कृष्ण ने, जगदम्बा ने 84 जन्म कैसे लिए। धर्म स्थापन करने वाले तो बाद में आते हैं तो उन्हों के (जन्म) ज़रूर कम होंगे। अथवा पिछाड़ी में जो झाड़ में छोटी2 टार–टारियाँ निकलती हैं, उनके जन्म अवश्य कम .... अच्छा, यह भी अपन जानते हैं कि ऐसे क्यों कहा जाता है कि लेफ्ट फोर हेविन। ज़रूर वहाँ बहुत सुख होगा

उन्हों को गाया ही जाता है सर्वगुण सम्पन्न......। ज़रूर वो अच्छे हैं तब तो हम माथा टेकते हैं। यदि वे भी भगवान, हम भी भगवान, तो फिर माथा क्यों टेकते? मनुष्य 84 जन्म ज़रूर लेते हैं। कोई ऐसे थोड़े ही कहेंगे, सूक्ष्मवतन वासी भी जन्म लेंगे। वे जन्म ले नहीं सकते। तो बाबा का तो ज़रूर उन्हों से भी न्यारा होगा। ब्र॰वि॰शं॰ की भी जयन्ती मनाते हैं। त्रिमूर्ति ब्र॰वि॰शं॰ का चित्र देते हैं। वे जन्म–मरण में कभी नहीं आते हैं। इस समय हम कह सकते हैं इसने 84 जन्म पूरे किए हैं। अभी यह अन्तिम जन्म है। इनका पहला जन्म है लक्ष्मी का और अन्तिम जन्म यह जगदम्बा का। ल॰ना॰ का मंदिर अलग है। महालक्ष्मी की बात अलग है। देवताओं से कुछ न कुछ माँगते रहते हैं। देवताएँ देते हैं अल्पकाल का सुख और संगमयुगी ब्राह्मण तो 21 जन्मों का सुख देते हैं। ब्राह्मण है ब्रह्मा की मुखवंशावली। नम्बर एक है सरस्वती, जिसको जगदम्बा कहा जाता है। जगदम्बा के मंदिर में भी जाकर समझाना चाहिए कि यह कब आई। इनके 84 जन्मों का वृतांत तुम बतला सकते हो। 84 लाख जन्मों का तो कोई वृतांत कर न सके। हम 84 जन्म सिद्ध कर बतलाते हैं। फिर उनकी हिस्ट्री भी लिखनी पड़े। सतोप्रधान इतने जन्म, फिर सतो, रजो, तमो इतने जन्म। बरोबर हम लिख देते हैं, दुनिया क्या जाने! अभी हम कृष्ण के मंदिर में जा कर कहेंगे, यह तो सतयुग में था। अभी तो कलियुग है। तो ज़रूर कृष्ण ने पुनर्जन्म लिया होगा। क्राइस्ट भी पुनर्जन्म लेते2 इस समय बेगर है। सब बेग करते हैं। तो अब कहते हैं, प॰पि॰प॰ आप हमें माया के दुखों से छुड़ाओ। दुखी होने से ही बेग करते हैं। तुम्हारा बेगर नाम प्रसिद्ध है। तुमको बेगर ज़रूर बनना ही है। सब कुछ दे, उनका बन फिर सब .... चलना है। बाप, टीचर, गुरु की मत मशहूर है। सबकी मत पर न चलना है। श्रीमत पर चलें(गे तो) श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनेंगे। यह है ही राजयोग। कितनी अच्छी2 बातें समझाई जाती हैं। तुम्हारी बातें जो सुनेंगे वे गदगद होंगे। बहुत आनन्द आवेगा; परन्तु यहाँ से गए और खलास। माया कोई कम नहीं है। कोई में थोड़ा बीज बोया जाता है तो फिर कब न कब ....सलाह निकल आता है। ऐसे भी होता है, टाइम अवश्य चाहिए। जब तक ज्ञान की दवा हो रही है तो कोई भी निष्फल न जावेगा। स्वर्ग में अवश्य आवेगा। बीज बोया हुआ होगा, तो दु(ख) के समय याद कर आवेंगे। एक2 बात बड़ी वण्डरफुल है। कोई अच्छी रीति समझे तो संशय बुद्धि से निश्चयात्मक बुद्धि बन जाय; परन्तु सर्विस करने वालों की बुद्धि में भी प्वाइंट्स जब ठहरे ना। ॐ।।

डायरैक्शन्स :– परमपिता प॰ के कल्प पहले वाले सिकीलधे ब्राह्मण कुल भूषणों, नूरे रत्नों प्रति बापदादा का यादप्यार, बाद समाचार कि (1.) योग पर इंगलिश में सच्चा पुस्तक छप रहा है, तैयार हुआ है, जो कि केवल अंग्रेजी में है और शीघ्र ही हिन्दी में छपना है। यह इंगलिश योग पर पुस्तक देहली से मँगाकर अच्छी तरह अध्ययन कर, यदि कोई अच्छी प्वाइंट डलवानी है तो वो प्वाइंट्स एक कॉपी जगदीश, एक कॉपी बाबा को फौरन भेज दें तो हिन्दी में डाली जाए। यदि अच्छी होगी तो स्लिप बनवा कर इंगलिश अन्दर चटका सकते हैं पृष्टों के बीच में। अच्छा, (2.) सच्ची गीता तैयार हुई है, जिसको चाहिए दिल्ली से मँगा सकते हैं। उसके अन्दर भी कोई नई प्वाइंट्स लिख देंगे तो स्लिप बनाकर अन्दर उर्दू में डाल सकते हैं। मिसाल तौर पर मनुष्य मात्र लौकिक बाप से अल्पकाल क्षणभंगुर सुख कौड़ी मूल्य वर्सा मिलता आया है। अब पारलौकिक बाप से एक ही जन्म में 21 जन्मों लिए स्वर्ग का मालिक बनने लिए वर्सा मिल रहा है, यदि कोई उन्हों पर ब(लि) चढ़े तो। दूसरा मुरार जी .... कार्टून वाला फोल्डर भी छपा है। दिल्ली से ही मँगाना है। ॐ।।